

direction from the Government of India.

Shri Bibudhendra Misra: No, Sir.

Shri Prabhat Kar: May I know whether this team had discussions with the Planning Commission about the fourth plan and their prospects of investment?

Shri T. N. Singh: I am not aware of it; probably they might have had.

Shri Sham Lal Saraf: May I know whether this team came on their own initiative to visit India or the ministry sponsored the visit?

Mr. Speaker: That has been answered. He said the visit was sponsored by the U.S. Government.

श्री दलजीत सिंह : मैं माननीय मंत्री से जानना चाहता हूँ कि कोलंबोरेषन की शकल में इंडस्ट्रीज लगाने के लिए कितनी दरखस्ते आई हैं और कितनी पेंडिंग पड़ी हैं ।

श्री त्रि० ना० सिंह : यह तो बड़ा चाईड क्वेश्चन है जिस का जवाब बिना नोटिस के देना मुश्किल है ।

श्री सरजू पाण्डेय : इसमें देखने से ऐसा मालूम होता है कि जो अमरीकी विज्ञानज्ञ आये थे उन्होंने भारत के प्राईवेट सेक्टर के व्यापारियों से बातचीत की है रोजगार के बारे में । तो क्या सरकार ने इस के नतीजों पर अभी विचार किया है कि अगर भारत के लोगों से और अमरीकियों से व्यक्तिगत सम्बन्ध कायम होंगे तो इस का कोई राजनीतिक प्रभाव तो नहीं होगा ?

श्री त्रि० ना० सिंह : यह जो रोजगार के सम्बन्ध में कोलंबोरेषन के प्रस्ताव आये हैं । यह आते रहते हैं और ऐसा होता रहता है । इसमें कोई राजनीतिक प्रेसर का सवाल नहीं उठता । मैं हाउस को विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि इससे ऐसे कोई सवाल नहीं उठेंगे ।

Shri H. N. Mukerjee: May I know if government has got any assessment of the collaboration agreements already under way for quite some time, so that they may find out whether any further collaboration on perhaps more favourable terms for foreign capital would or would not be detrimental to our social orientation?

Shri T. N. Singh: We are constantly watching the collaboration arrangements from time to time and I can assure the House that the interest of the nation will always be kept uppermost.

Paper and Paper Products Delegation to E. Africa

+
 *818. { **Shri Raghunath Singh:**
Shri Kanakasabai:
Shri D. C. Sharma:
Shri Onkar Lal Berwa:
Shri P. H. Bheel:
Shri Rameshwar Tantia:
Shri Ram Harkh Yadav:

Will the Minister of Commerce be pleased to state:

(a) whether the paper and paper products delegation that recently visited East Africa, Middle East and West Pakistan has submitted its report to Government;

(b) if so, the main recommendations made by the Delegation; and

(c) the Government's reaction thereto?

The Minister of Commerce (Shri Manubhai Shah): (a) The Sales-cum-Study Delegation of Indian Paper and Paper Products, which visited certain African and West Asian countries and West Pakistan in January and February 1965, has recently submitted its report to the Chemicals and Allied Products Export Promotion Council.

(b) and (c). The Sales-cum-Study Delegation has given its findings for the information of the trade. Government will, of course, give due con-

sideration to any specific suggestions that are made by the Chemicals and Allied Products Export Promotion Council after examining the report.

श्री रघुनाथ सिंह : क्या मैं जान सकता हूँ कि इस रिपोर्ट में मुख्य मुख्य बातें क्या हैं जिन की तरफ सरकार को ध्यान देना चाहिये ?

श्री मनुभाई शाह : असल बात यह है कि उन्होंने यह बतलाया है कि हम जो यह मानते हैं कि हिन्दुस्तान की इंडस्ट्रीज का सामान बाहर नहीं बिक सकता है वह बात गलत है। अफ्रीका में तो ऐसी बहुत सी मार्केट हैं जहां हिन्दुस्तान के इंडस्ट्रीज खूब बिक सकती हैं। दूसरे उन्होंने देखा कि तीन चार कंट्रीज ऐसी हैं जिन को हमारे यहां कि क्वालिटी बहुत पसन्द आई है इस लिये वह चाहते हैं जहां तक हो सके वह हमसे ही कागज खरीदें।

दूसरी बात यह है कि जो शिपिंग की सर्विसेज है हिन्दुस्तान और अफ्रीका के बीच में वह इतनी अच्छी नहीं हैं और इसकी बजह से माल चार चार और पांच पांच महीने तक पहुंचता नहीं है। इतनी सब बातें उन्होंने देखीं हैं और इस की रिपोर्ट उन्होंने गवर्नमेंट को दी है।

श्री विश्राम प्रसाद : अभी मंत्री जी ने बताया कि अफ्रीका में हिन्दुस्तान के कागज की बहुत खपत हो सकती है। लेकिन हिन्दुस्तान में कागज की बहुत कमी है और सिक्वोरिटी पेपर आज तक हिन्दुस्तान में नहीं बनता। मैं जानना चाहता हूँ कि अगर सरकार कागज का निर्यात करेगी तो देश की कमी को कैसे पूरा कर सकेगी ?

श्री मनुभाई शाह : अगर हिन्दुस्तान की सारी आवश्यकताएं पूरा करने के बाद हम एक्सपोर्ट करने की बात सोचेंगे, तो वह दिन कभी नहीं आयेगा कि हम एक्सपोर्ट

कर सकें। जितना उत्पादन बढ़ता जाएगा उतना खर्चा बढ़ता जाएगा और हम विदेशों को नहीं भेज सकेंगे। और इस तरह से हमारी आर्थिक समस्या कभी हल नहीं हो सकेगी। जो उत्पादन बढ़ता जाता है उस का कुछ हिस्सा हम बाहर भेजते हैं। इस लिए मैं माननीय सदस्य से यह विनती करूंगा कि इस बारे में अपना दृष्टिकोण बदलें।

Shrimati Savitri Nigam: May I know whether this Committee has also explored the possibility of exporting hand-made paper which is being produced here on a very large scale?

Shri Manubhai Shah: No, Sir. These people did not go in for hand-made paper. We are exploring its possibilities separately. To United States we are exporting hand-made paper. But the problem is to have a uniform quality and large bulk supply in a regular manner. The Khadi Commission itself is making attempts in this direction.

श्री राम सहाय पाण्डेय : माननीय मंत्रीजी ने बताया कि जो दल अफ्रीका के देशों में गया था उसने यह रिपोर्ट दी है कि हमारा कागज वहां बहुत लोकप्रिय हो रहा है। मैं जानना चाहता हूँ कि दुनिया के अन्य देशों में जो और ज्यादा अच्छा कागज बनता है उसको बनाने का भी सरकार विचार कर रही है, ताकि हम और ज्यादा कागज का निर्यात कर सकें ?

श्री मनुभाई शाह : पहले तो मैं यह बात नहीं मानता कि हमारे यहां का कागज कमजोर या घटिया है। यह बहुत अच्छा है। दूसरे टिश्यू पेपर जो कि दुनिया में बहुत नामवर कागज माना जाता है और अच्छा गिना जाता है उसका भी केवल एक फैक्टरी से डेढ़ करोड़ का एक्सपोर्ट करने हैं। व्हाइट प्रिंटिंग पेपर भी भारत में स्टैंडर्ड क्वालिटी का बनता है। केवल न्यूज-प्रिंट जो हमारे यहां बनता है उसकी क्वालिटी कुछ घटिया है। इसलिए मैं मानीय सदस्य

की कहना चाहता हूँ कि हमारे कागज की क्वालिटी अच्छी है। वैसे हम विचार कर रहे हैं कि हम ग्रॉट पेपर, ग्लेज पेपर, प्रिंटिंग पेपर और ग्राफ पेपर भी हम यहाँ बनायें। जिससे उनका भी एक्सपोर्ट हो सके। हमारी तकलीफ यही है कि हमारी प्राइस बहुत ज्यादा है।

श्री हुकम खन्द कछवाय : अभी तक इस कागज की बलेक मार्केटिंग नहीं हो रही है। क्या आपकी विश्वास है कि अगर यह कागज बाहर भेजा जाने लगेगा तो इसकी बलेक मार्केटिंग नहीं होने लगेगा ?

श्री मनुभाई शाह : माननीय सदस्य को इसी बात की फिक्र रहती है।

Dr. Ranen Sen: Only yesterday we were told that paper, not only newsprint but other kinds of paper also, is imported from outside India which involves expenditure of foreign currency. May I know how this economy is worked out by the Government of India that while we are importing paper from outside, we are exporting paper produced by us?

Shri Manubhai Shah: There are numerous varieties of paper. In some varieties like the basic white printing paper we are surplus. But there are certain other types of paper which are so small in our requirements that they cannot be economically produced here. It is only those scarce varieties that we are importing. In all commodities having diverse types of qualities, some varieties are surplus and some are in deficit.

श्री राम हरल्ल यादव : क्या इस डेलीगेशन ने यह भी सिफारिश की है कि पाकिस्तान में राईटिंग और प्रिंटिंग पेपर में बहुत कमी है पर वहाँ न्यूज प्रिंट काफी है और इसलिए बारटर सिस्टम द्वारा यहाँ से राईटिंग और प्रिंटिंग पेपर के बदले न्यूज प्रिंट मंगाया जाए ? अगर यह सही है,

तो गवर्नमूट इस बारे में क्या कार्रवाई कर रही है।

श्री मनुभाई शाह : यह विल्कुल सही है कि पाकिस्तान में न्यूज प्रिंट सरप्लस है और वहाँ व्हाइट प्रिंटिंग पेपर की कमी है। पर इसमें कोई बारटर की जरूरत नहीं है। हमारा न्यूज प्रिंट के लिए वैसे भी पाकिस्तान के साथ रुपी पेमेंट का एग्रीमेंट है, और जो हम ज्यादा कागज वहाँ भेजेंगे तो हमारा एमाउंट वहाँ और बढ़ेगा, तो न्यूज प्रिंट भी वहाँ से ज्यादा मंगा सकेंगे।

हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन, रांचीजी

* 820. **श्री सिद्धेश्वर प्रसाद :** क्या उद्योग तथा सम्भरण मंत्री 26 फरवरी, 1965 के तारांकित प्रश्न संख्या 189 के उत्तर के संबंध में यह बताने की कृपा करेंगे कि 24 दिसम्बर, 1964 को हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन, रांची में लगी आग के बारे में अब तक की गई जांच के परिणामस्वरूप इस मामले में आगे क्या कार्यवाही की गई है ?

The Deputy Minister in the Ministry of Industry and Supply (Shri Bibudhendra Mishra): Necessary investigations are still in progress.

श्री सिद्धेश्वर प्रसाद : मैं यह जानना चाहता हूँ कि जब रांची के हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन में पांच बार आग लग चुकी है, फिर भी क्या वजह है कि सरकार उसको आग से बचाने के लिए उचित कार्रवाई करने में देरी कर रही है ?

उद्योग तथा सम्भरण मंत्रालय में भारी इंजीनियरिंग तथा उद्योग मंत्री (श्री त्रि० ना० सिंह) : उसे बचाने के लिए जो कुछ किया जा सकता है उसे किया जा रहा है। पर आपका सवाल तो चांज पड़ताल के बारे में था। पिछली बार मैंने सदन में यह कहा था इसमें कुछ मिसचीफ या सेबोटेज है, और उसकी जांच हो रही है। वह बहुत तेजी से चल रही है। लेकिन अभी वह